उच्च दा पीर

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विचों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

गोबिन्द कहे जिस वेले बणया उच्च दा पीर, उच्च अगम्म अथाह दिती वडयाईआ। मेरी तक्क ना सक्कया कोई तस्वीर, शाह हकीर समझ कोई ना पाईआ। मेरा मैं ना होया दिलगीर, खुशी अंदर खुशी वज्जी वजाईआ। मैं तक्क के वेख्या अखी़र, आख़र इक्को नज़री आईआ। जिस दे हुक्म दी तामीर, ताअमील अंदर अग्गे सेव कमाईआ। चले ना कोई दलील, वासना वंड ना कोई वंडाईआ । किसे ना जाणया बसतर नील, भरम पिआ तहसीलां ठाणयां। पुरख अकाल अग्गे कीती अपील, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द कर कलयानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वखानया।

पुरख अकाल अगम्मी कीती तदबीर, अचरज खेल रचाईआ। सति धर्म दी दे के धीर, सच सच दिता समझाईआ। बिना कलम शाही दस्सी लकीर, धार धार विच्चों बदलाईआ। नज़री आया पैगम्बरां दा पीर, पीरां दा पीर शाह हकीर धुरदरगाहीआ। मैं तक्कया नाल नीझ, बेनज़ीर नूर खुदाईआ । जिस दी मेरे अंदर तासीर, तसबी माला ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल आप वखाईआ।

गोबिन्द कहे जिस वेले मैं चढ़या उपर खाट, खटका रिहा ना राईआ। दो जहानां मुक्क गई वाट, पान्धी पन्ध ना कोई वखाईआ । परम पुरख परमेशवर तक्कया साथ, साहिब स्वामी धुरदरगाहीआ।

शब्द अगम्मी सुणाए बात, नाम निधाना ढोला गाईआ। गोबिन्द तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी इक्को ज़ात, शाह फ़कीर इक्को रंग वखाईआ। तेरा मेरा लेखा बिना कलम दवात, काग़ज वंड ना कोई वंडाईआ। नेत्र खोल्ह बिन अक्खां झाक, पड़दा पलक उठाईआ। चौंह दी दिसी जमात, कलमा हक़ हक़ सुणाईआ। सच दी वेख महराब, महबूब सीस निवाईआ। सयदयां विच्च आदाब, नैणां नीर चलाईआ। आई अगम्मी आवाज़, शब्द करी शनवाईआ। संदेशा देवे पैगम्बरां दा बाप, नूर नुराना नूर अलाहीआ। गोबिन्द दा साक, सज्जणा जोड़ जुड़ाईआ। भविख्तां दा वाक, मुहम्मद दए गवाहीआ। गोबिन्द साख्यात, सेजा रिहा सुहाईआ। ग़रूब होण वाला आफ्ताब, आपणा रंग बदलाईआ। सोहण वाली अन्धेरी रात, शबे शबाब रही शादिआना गाईआ। मिलणा इक्क अहबाब, मुहब्बत विच्च समाईआ। अगम्मी आवाज़ आई कलमे वालयो खाणा नहीं कबाब, काअबा इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

गोबिन्द कहे जिस वेले मैं सिँघासण चढ़या, सिँघ रूप बदलाईआ। पंज तत्त दी गुफ़ा अंदर वड़या, पड़दे अंदर नूर खुदाईआ। बिना अक्खरां तों कलमा पढ़या, हरफ़ हरूफ़ वंड ना कोई वंडाईआ। मेरा निरंतर अन्तर ठरया, मंत्र सुणया शहनशाहीआ। खुश वेख्या गगन गगनंतर दो जहान हरया, रूप अनूप बदलाईआ । सति दवारे पुरख निरञ्जण खड़या, परवरदिगार सोभा पाईआ। बिना हत्थां मेरे मस्तक हत्थ धरया, दस्सया हुक्म अलाहीआ। गोबिन्द तूं मैनूं मैं तैनूं वरया, वरयां दी गंढ दिती पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म वरताईआ।

गोबिन्द कहे जिस वेले सेजे सुत्ता , बिन तकीए सीस टिकाईआ । बदली वेखी दो जहान रुत्ता, ब्रह्मण्ड खण्ड रूप वटाईआ। पुरख अकाल किहा वाह मेरया पुत्ता, वाहिगुरू कह के वाह वाह गुरू मैनूं दिता समझाईआ। नाले आखया थोड़ा जिहा तेरे उत्ते गुस्सा, इशारे नाल दृढ़ाईआ। हुण गुरमुखां दे कंधे चढ़ के होवीं उच्चा, फेर गुरमुखां दे अंदर देणा सुआईआ। जिथों किसे नूं लभ्भें लुका, खोजयां फड़न कोई ना पाईआ। कलमें वालयां किहा असीं अज्ज तों छड्ड दिता पीणा हुक्का, हुक्म मन्नयां बेपरवाहीआ। गोबिन्द किहा मैं तुहानूं सुणावां इक्क तुका, तूं मेरा मैं तेरा ढोला लैणा गाईआ। इक्क कोल सी टुक्कर सुक्का, ओस कन्नी गंढ खोल्ह के अग्गे दिता टिकाईआ। गोबिन्द पंजां उंगलीआं नाल चुक्का, भन्न के भोर के ओसे दी झोली दिता टिकाईआ। बचन दिता एह सुच्चे दा सुच्चा, सच दी दए गवाहीआ। हुण मैं गोबिन्द तत्तां वाला मनुक्खा, काया चोला रिहा हंढाईआ। जिस वेले शब्दी धार हो के उठा, निरगुण निरवैर हो के फेरा पाईआ। बेपरवाह पुरख अकाल मेरा तुट्ठा, दीन दयाल दया कमाईआ। लोकमात लक्ख चुरासी विच्चों फेर तैनूं फड़ उठावां आपणे हत्थ गुट्टा, नाम हलूणा इक्क लगाईआ। मेरा प्यार दो जहान कदे ना तुट्टा, एथे ओथे तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेलणहारा जोड़ जुड़ाईआ।

गोबिन्द कहे मैं सेजे चढ़ के हत्थ रक्खया आपणी उपर छाती, दस्त दस्त नाल दबाईआ। जल्वागर तक्कया कमलापती, पतिपरमेशवर बेपरवाहीआ। जिस दी खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी साची, सति सति रिहा वरताईआ। ओस मैनूं हौली जही किहा हुण तेरी काया माटी काची, तत्तां वाली नज़री आईआ। जिस वेले कलिजुग आवे अन्त अन्धेरी राती, तेरा रूप दिआं बदलाईआ। खेलां खेल बहु बिध भांती, बिध आपणी ना किसे समझाईआ। कोई ना जाणे जोत दी धार जाती, जोती जाता आपणे हत्थ रखवाईआ। मंज़ल औखी रक्खां घाटी, बिन मेरे चढ़न कोई ना पाईआ। गोबिन्द किहा उह साहिब पुरख अबिनाशी, तेरी बेपरवाहीआ। तेरा खेल मण्डल रासी, दो जहान वज्जे वधाईआ। मेरी इक्को इच्छया इक्को आसी, आशा आपणी दिआं दृढ़ाईआ। मेरे गुरमुख मेरे सदा होवण साथी, सगला संग निभाईआ। मंज़ल पूरी करां उहनां दी वाटी, पैंडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ।

गोबिन्द कहे मैं लेट के अक्खां मीटीआं झब्ब, पलक पलक नाल दबाईआ। मैनूं हुक्म होया हब्ब, हम साजण दिता दृढ़ाईआ। गुरमुख प्रेमी आपणे लभ्भ, निझ नेत्र लोचण कर रुशनाईआ। शब्दी धार नाल सद्द, रसना जेहवा ना कोई हिलाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ, प्रेम प्रीती इक्क बंधाईआ। गोबिन्द कहे मैं पुरख अकाल आखया, मैनूं तत्तां नालों हो लैण दे अड्ड, काया माटी दे तजाईआ। फिर सन्त सुहेले आपणी बणा के यद, घर साचे लवां जुड़ाईआ। इक्को पदवी इक्को मार्ग इके दे के पद, पत्तत पावन तेरे विच्च समाईआ। मैं नज़र ना आवां दीन दुनी विच्च जग, जागरत जोत करां रुशनाईआ । गुरमुखां दे अंदर वड़ के उपर शाहरग, शाह पातशाह हुक्म दिआं सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

गोबिन्द कहे मैं सहज बदलया पासा, तन वजूद बदलाईआ। वेख्या दो जहान तमाशा, ब्रह्मण्ड खण्ड दुहाईआ। मैनूं आया हासा, खुशीआं विच्च ढोला दिता गाईआ। वाह वाह तेरा खेल पुरख अबिनाशा, तेरी बेपरवाहीआ। श्री भगवान झट्ट खोल्ह के आपणा खाता, बिना खतूतां तों मैनूं दिता जणाईआ। गोबिन्द तैनूं बणौणा उह दाता, जो दो जहान देवणहार अखवाईआ। जन भगतां पूरा करें घाटा, लेखा पिछला झोली पाईआ। हुण तूं अमृत प्याया नाल बाटा, फेर गुरमुखां दे अन्तर निझर झिरना देणा झिराईआ। आत्मा दा बण के आका, परमात्मा हो के हुक्म सुणाईआ। हुण तेरा मुसव्वर खिचके ख़ाका, कलगी तोड़ा बाज रहे जणाईआ। मात पिता दा दस्सदे नाता, पटने ढोले रहे गाईआ। फेर तेरा ओथे रक्खां वासा, जिस दी समझ ना कोई समझाईआ। तेरा मेरा नूर होवे प्रकाशा, शब्दी डंका थाउँ थाईंआ। दोहां दा होवे इक्क भरवासा, दूजी धार ना कोई बदलाईआ। तूं मेरा खोल्हणा खुलासा, मैं तेरी करां पढ़ाईआ। गुरमुखां पूरी करां आसा, आहिस्ता आहिस्ता लेखा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वडयाईआ।

गोबिन्द कहे जिस वेले होया शब्दी फ़ुरना, हुक्मी हुक्म मनाईआ। कुहारो अग्गे हुण तुरना, तुरत लैणा उठाईआ। इक्क प्रीती अंदर जुड़ना, तूं ही तूं ही राग अलाईआ। इक्क कहार किहा कुछ तेरे कोलों सुणना, सानूं दे समझाईआ। गोबिन्द किहा मैं फेर लोकमात विच्च मुड़ना, निरगुण हो के वेस वटाईआ। ओस किहा मैनूं कदे ना भुल्लणा, सलामालेकम कह के सजदा सीस दिता झुकाईआ। गोबिन्द किहा, नहीं, तुहाड्डा दवारा फेर खुल्हणा, ख़ालस ख़ालसे दिआं बणाईआ। तुसां जन्म जन्म जन्म विच्च नहीं रुलणा, माणस दे माणस आपणे नाल मिलाईआ। तुहाढे नाल मिल के गोबिन्द फलणा फुलणा, पत डाल्ही नाल महकाईआ। भाग लगणा साची कुलना, कुलवन्त होए सहाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़िआर अन्धेर झुलणा, सति सच मुख छुपाईआ। वाहिगुरू जाप सारया करना उत्ते बुल्हणा, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख मेरे कंडे तुलणा, नाम खण्डा लवां उठाईआ। कूड़ी क्रिया बूटा हुलणा, अमृत रस ना कोई चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ।

कहार किहा मैं सजदा करां काअबा, किबल इक्को नज़री आईआ। गोबिन्द किहा कदी तक्कया ई आपणा बाबा, जिस नूं मुहम्मद "अब्बा" कह के सीस निवाईआ। जिस नूं उच्ची उच्ची पुकारो नाल बांगा, उंगलां कन्नां विच्च पाईआ। उह स्वामी वरतया सवांगा, खुदा खुद आपणा वेस वटाईआ। कहार किहा सानूं अग्गे होर ताघा, ध्यान ध्यान विच्च रखाईआ। गोबिन्द किहा ज़रा पहली पुट्टो उलांघा, कदम अग्गे लैणा उठाईआ। उन्हां नूं मुहम्मद दिसया नांगा, रो रो रिहा कुरलाईआ। परवरदिगार धुरदरगाही सभ दा सांझा, कलमयां वाली वंड ना कोई वंडाईआ। उह आदि जुगादि जुग चौकड़ी लोक परलोक तबकां विच्च औंदा जांदा, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। जिस नूं वेख ना सके कोई पंडत पांधा, मुला शेख़ नज़र ना कोई टिकाईआ। ना उह सूर खाए ना उह खाए ढांडा, ना उह मित्र सज्जण ना उह वसे आंढ गवांढा, लक्ख चुरासी अंदर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

गोबिन्द कहे जिस वेले कहारां कदम चुक्कया अग्गे, धुर दी सेव कमाईआ। हुक्म दिता सूरे सर्बग्गे, शहनशाह करी जणाईआ। गोबिन्द तेरे नाल मिल के इन्हां दी जोत जगे, जगत होवे रुशनाईआ। पुरख अकाल आपणी धारों कढ्ढे, देवे माण वडयाईआ। हुक्में अंदर हाकम हो के सद्दे, संदेशा इक्क जणाईआ। सच दवारे आवण भज्जे, भजन बन्दगी दए समझाईआ। बिनां रसना तों देवे मज़े, मज़ाक मुक्के जगत खुदाईआ। जे कोई पुच्छे की वज्हे, वज्हा सके ना कोई समझाईआ। जिस तों विछड़े ओसे ने लभ्भे, उहो दए वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

गोबिन्द कहे चलदयां चलदयां वैराग अंदर जरनैल सिँघ तेरा अक्खां चों निक्कल गिआ नीर, नीवां हो के ज़िमीं वल ध्यान लगाईआ। ओस वेले हस्स के किहा कबीर, काअबिआं दा पैंडा देणा मुकाईआ। शरअ दी तोड़ ज़ंजीर, शहनशाह लैणा मिलाईआ। मैं

तैनूं दस्सां तदबीर, सहज सहज समझाईआ। इस तों परे नहीं अख़ीर, आख़र एहो धुर दा माहीआ। होवीं ना दिलगीर, आस निरास ना कोई बणाईआ। हत्थों सुट्ट के शमशीर, बण के उच्च दा पीर, आसण तुहाडे उत्ते रखवाईआ। जिस नूं समझे ना कोई अमीर गरीब, शाह सुलतान ना कोई दृढ़ाईआ। इस ने पिछले उत्ते फेर के लकीर, अगला लेखा देणा बणाईआ। एहदा साथी गहर गम्भीर, नर निरँकारा नज़री आईआ। जिस ने सुहाया इस दा सरीर, तत्त दिती वडयाईआ। तुहाडी बदल देवे ज़मीर, ज़ामन हो के दया कमाईआ। उन्हां किहा या अमीन, तेरे हत्थ वडयाईआ। कबीर किहा मैं जुलाहिआं घर कमीन, कमलापत मिल के कामल मुशर्द विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मालक वेख वखाईआ।

कहार किहा की मालक चलिउँ आख, आपणा आप छुपाईआ। ओस किहा मैं दस्सया साफ़, सहज दिता जणाईआ। अन्त तुहाडा होणा साथ, एसे नाल वडयाईआ। खेल वेखणा पुरख अबिनाश, पतिपरमेशवर बेपरवाहीआ। तुहाडा मेला होणा साख्यात, सति सतिवादी जोड़ जुड़ाईआ। प्रेम प्रीती बज्झे नात, नाता इक्को इक्क समझाईआ। हुण लेखा नहीं नाल कलम दवात, फेर शब्दां विच्च वडयाईआ। शहनशाही सम्मत विच्च तुहाडे जन्म दी तुहानूं वी मिलणी दात, कर्म दी कामना पूर कराईआ। सो सुहञ्जणी आ गई रात, भिन्नड़ी खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच सरनाईआ।

भिन्नड़ी रैण कहे मैं भागाँ भरी, सोहणी सुहञ्जणी नज़री आईआ। जिस विच्च गोबिन्द गुरमुखां उपर किरपा करी, शब्दी शब्द दिती वडयाईआ। सुलखणी होई घड़ी, पल पल दए गवाहीआ। जन भगतो तुहाडी प्रेम प्रीती सेवा बड़ी, बहुतयां तों बहुती नज़री आईआ। रविदास वाली पिछली बज्झी लड़ी, लड़ सक्कया ना कोई छुडाईआ। अग्गे आवण जावण तों साफ़ होया बरी, ब्रह्मा विष्न शिव सीस निवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां उत्ते किरपा करी, किरपाल हो के कर्मां तों लिआ छुडाईआ। (१६ माघ श सं १ जरनैल सिँघ दे गृह)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

नंदू तेरी दस्सां तकदीर, प्रेम प्यार नाल जणाईआ। जिस वेले गोबिन्द बणया सी उच्च दा पीर, आपणा आप बदलाईआ। तेरा रूप सी इक्क मलंगाँ वाला फ़कीर, जामा लीर लीर वखाईआ। तेरे कोल सी इक्क ज़ंजीर, चौदां कड़ीआं वाली गंढ पवाईआ। उस दे विच्च सी मुहम्मद दी तस्वीर, जो सत्त सत्त दे विच्च दित्ती लटकाईआ। तूं घत्त के आइउँ वहीर, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरे कासे विच्च सी खीर, ढाई पा गिणाईआ। तेरी अंदरों बदल दित्ती ज़मीर, हुक्म इक्क सुणाईआ। तूं तक्कया मुहम्मद

नालों चंगा एह पीर, पीरां दा पीर नज़री आईआ। तूं बोल के किहा अखीर, आजज़ हो के सीस निवाईआ। कुछ मैनूं दे असीर, तेरे हत्थ वडयाईआ। गोबिन्द किहा चुप्प, फ़कीर दा अंदरों वग गिआ नीर, बाहरों नैणां छहबर लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वरताईआ।

शब्द अगम्मी किहा गोबिन्द, फ़कीर अताउला दित्ता जणाईआ। मैं मुहम्मद नहीं मैं वाली हिंद, सूरबीर जोधा बेपरवाहीआ। मैं भिखारी नहीं दाता गुणी गहिंद, गहर गम्भीर वडी वडयाईआ। भेस बदलया कारन इंज, तैनूं दिआं जणाईआ। सच फ़कीर बणौणे आपणी बिन्द, आपणे नाल जुड़ाईआ। ओस फ़कीर दे कोल सी इक्क किंग, जेहड़ी सज्जे हत्थ दी पहली उंगली नाल दित्ती वजाईआ। रस्सी नालों खोल्ह के उह कच्ची मिट्टी दा कासा जिहनूं कहन्दे मिट्टी दी टिंड, अग्गे दित्ता टिकाईआ। जे तूं परवरदिगार नूर इल्लाही धुर दा गोबिन्द, इस नूं लैणा खाईआ। उस दे नाल इक्क टुकड़ी बध्धी सी हिंग, जेहड़ी खुशबू वक्खरी रही जणाईआ। उह पैहलों सांभ के रक्खी सी तिन्न दिन, जो गोबिन्द दित्ती समझाईआ। ओस दे विच्च सी इक्क चिन्न, जो चन्द सतारा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी इक्क वखाईआ।

गोबिन्द अंदरों किहा सुण अताउला, खतूत धुर दा दिआं जणाईआ। वेख मैं किड्डा सोहणा बणयां मुल्ला, मौलवीआं वाला रूप वटाईआ। ओस फ़कीर ने आपणे सिर तों लाह के कुल्ला, चरनां उत्ते दित्ता टिकाईआ। तूं वाकया पीरां दा पीर गोबिन्द कदे नहीं भुल्ला, भुल्लयां नूं रसते पाईआ। चहवां ने तैनूं चुक्कणा वांग फुल्ला, जो खादम बैठे नज़री आईआ। मैं इक्क दस्सण आया होर भेत जिस दे विच्च उहला, शाह नवाब जिस दी खोज खुजाईआ। बेशक तूं रसना नाल गावें बिसमिल्ला इल्ललिला ढोला, लाइल्ला रसूल ध्यान जणाईआ। जे आह चौदां कड़ीआं वाला संगल ना होया तेरे कोला, ओनां चिर तैनूं पीर मुसलम कहे कोई ना राईआ। गोबिन्द ने प्रेम नाल उस दे अंदर दित्ता झकोला, जल्वा नूर कर रुशनाईआ। ओस ने ओस वेले आपणे गल दे विच्चों खोल्ह, गोबिन्द गल दित्ता पाईआ। नाले किहा तूं हरिजन मौला, मुहब्बत रूप गुसाईंआ। गोबिन्द हस्स के किहा कुछ मेरे नाल कर लै कौला, इकरारनामा लै लिखवाईआ। फ़कीर ने किहा जे कदी मुड़ के आवें उपर धौला, मैनूं आपणा संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

फ़कीर किहा एह ज़ंजीरी विच्च तस्वीर मुहम्मद पाक रसूल, बिन मेरे तेरे नज़र किसे ना आईआ। तूं मैनूं कीता कबूल, मैं दस्सया आपणा असूल, असलीअत दित्ती जणाईआ। अग्गे दोहां दा होर रूल, जान्दयां पीरां राह विच्च लैण अटकाईआ। उहनां पुच्छणा तैथों कलमा एह माअकूल, मुकम्मल देणा सुणाईआ। एस तस्वीर नाल उहनां दा बदल जावे माहौल, सिर सके ना कोई उठाईआ। हँसी खुशी विच्च करन मखौल, किधरों उच्च दा पीर आया फ़कीर, कन्धयां उत्ते डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

गोबिन्द किहा मेरे विच्च सच तौफ़ीक, तैनूं दिआं समझाईआ। कुछ मंग मेरे रफ़ीक, धुर दा दान दिआं वरताईआ। ओस ने किहा हुण फ़कीर फेर बणावें अज़ीज, धन दौलत दी लोड़ कोई नहीं राईआ। भावें तन विच्च होवे नहीं कमीज़, कमर बंन के तेरी सेव कमाईआ। जे मैं भुल्ल जावां तेरी रहे ना कोई तमीज़, तूं रहमत कर के मैनूं लैणा मनाईआ। गोबिन्द किहा मैं रक्खवां तेरी ज़रूर उडीक, वेखवां ध्यान लगाईआ। जेहड़ी तूं मेरे गल विच्च कीती बख़्शीश, आपणा हार तन शिंगार मेरा दित्ता बणाईआ। जेहड़ा मुहम्मद तेरे वस्सया नज़दीक, ओस नूं महबूब मालक नूं तैनूं दिआं मिलाईआ। उह समां बहुता नहीं थोड़ा नज़दीक, ढईआ इक्को गिआ जणाईआ। तेरे आपणे हत्थीं सच करां तस्दीक, शहादत आपणी नाल रखवाईआ। मरन तों पैहलों मेरी तेरे नाल वसीअत, असलीअत असल दिआं प्रगटाईआ। पर मेरी इक्क सुण नसीअत, सच दिआं जणाईआ। जिस वेले प्रभू भगतां नाल मिल के सभ नूं दस्सी इक्क वलदीअत, पिता पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। दुनियां दी बदल दित्ती जमहूरीअत, तैनूं जमां दे कोलों लए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच्च रखवाईआ।

फ़कीर किहा ऐ फ़क्करां दे फ़क्कर, लासानी बेपरवाहीआ। मैं तेरे पिच्छे मार के आया चक्कर, चकना चूर आपणा आप कराईआ। तूं कूड़ी क्रिया नाल ला के टक्कर, सति सच रिहा प्रगटाईआ। फकीर किहा मैं पढ़या कोई नहीं अक्खर, अलफ ये झोली कोई ना पाईआ। तूं वेख लै मेरे विच्च की कसर, जो कोई कसर रह गई अग्गे नूं पूरी दईं कराईआ। तेरे चरनां विच्च होवे मेरा बसर, बिसतर आत्म सेज तूं सज्जण लैणी हंढाईआ। तेरी मेहर दा ख़तम ना हो जाए असर, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ। बेशक सारी सृष्टी ओडा दे नाल इशारीए कसर, मेरी किस्मत देणी बदलाईआ। दरगाह साची जांदयां अद्ध विच्च मेरा होवे कोई ना हशर, हाशम आपणा रंग रंगाईआ। गोबिन्द किहा एह की लग्गा मंगण, जो मंगे तेरी झोली दिआं पाईआ। फ़कीर ने किहा भावें मैं पैरां तों फिरां नंगन, सिर ओढन ना कोई टिकाईआ । तेरे प्रेम प्यार दा मेरी अन्तर आत्मा लग्गा रहे सगन, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। गोबिन्द ने हत्थों लाह के कंगन, ओस दे हत्थ दित्ता फड़ाईआ। ओन ओसे वेले मोड़ के गोबिन्द दे चरनां उत्ते कीती बन्दन, एह मेरा विचोला लैणा बणाईआ। मैं इक्को तेरी प्रीती आया मंगण, दूजी लोड़ रही ना राईआ। हुण कहारो चुक्क लउ कंधण, मोढयां उत्ते उठाईआ। फ़कीर कर के डण्डौत बन्दन, ख़ाली टिंड लै के भज्जा वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा सभ दा रिहा मुकाईआ।

नंदू एह लेखा पिछला अगली बणत, साची दिआं समझाईआ। जिस पदवी नूं जगत जगिआसू लभ्भदे सन्त, खोजण थाउँ थाईंआ। दिवस रैण गौंदे सन्त, ढोले रहे जणाईआ। पर एस तर्हा किसे नूं नहीं मिल्या धुर दा कन्त, जो फड़ बाहों गले लगाईआ। ओस दा बेपरवाही दा नहीं कोई अन्त, कोझे कमलयां कंगलिआं देवे माण वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ।

नंदू एह अनन्द दा नंद, अनन्द रिहा वखाईआ। गुरमुख चन्द दा चन्द, चन्द रिहा चमकाईआ। बन्द दा बन्द, बंधन रिहा तुड़ाईआ। गंढ दी गंढ, गंढ आपणे नाल पवाईआ। जे पिच्छे गई हंड, अग्गे देवे कोई ना दंड, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जगत जहान कर के जे रही भुक्ख नंग, अग्गे होणा किसे नहीं तंग, सचखण्ड देवां माण वडयाईआ। एह गोबिन्द दे कोल वक्खरा ढंग, नाम अनमुल्लड़ा रंग जिस चाहे देवे चढ़ाईआ। एस प्रभू नूं ना कोई शर्म हया ना शरम, ग़रीब निमाणयां नूं ला के अंग, अंग आपणे लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा वेखे चाईं चाईंआ।

फ़क्कर जन्दयां जन्दयां अठासी कदम उत्ते आ गई इक्क दलील, पिच्छा भौं के धूढ़ी मस्तक लई लाईआ। गोबिन्द दे दूरों वेख के बसतर नील, खुशी नाल आपणे सिर विच्च ख़ाक दित्ती रमाईआ। चार कुण्ट मार के सत्त चक्कर वेख्या मेरा दरगाह दा इक्क वकील, बेनज़ीर नज़री आईआ। गोबिन्द दी आवाज़ आ गई आ सुण मेरा कलमा हदीस, हज़रत हो के दिआं सुणाईआ। उठ के वेख तैनूं मिला दिआं जगदीश, दो जहानां दा मालक बेपरवाहीआ। जिस दे छत्तर झुल्ले सीस, शहनशाह नज़री आईआ। ओस फ़कीर ने किहा गोबिन्द की कीटां दा कीट, नीचां दा नीच रूप वटाईआ। गोबिन्द ने अठासी कदम तों हत्थ रक्खया उस दी पीठ, अचानक धक्का दित्ता लगाईआ। ओस फ़कीर ने दोवें अक्खां लईआं मीट, तूं ही तूं ही ढोला गाईआ। गोबिन्द ने किहा मैं तेरी आप करूं उडीक, तूं खुशीआं नाल सौणा बेपरवाह हो के डेरा लाईआ। ओस वेले ओस दी बिरहों नाल निकल गई चीक, चीक चिहाढ़ा दित्ता पाईआ। ओधरों बत्ती साल दी सवाणी इक्क गौंदी आवे गीत, मटकी सिर दे उत्ते टिकाईआ। उह कहन्दी आवे जे कोई इक्क नाल मिल्या मेरी इक्क नाल ला दिउ प्रीत, इक्को मेरा मालक इक्को मैं उहदी नज़री आईआ। ओस फ़कीर ने ओसे वेले जांदे सज्जी बाहों फड़ के लिआ घसीट, आ मैं तैनूं गोबिन्द दिआं वखाईआ। झट्ट उहदे अंदरों बदल गई नीत, झट्ट मटकी दित्ती सुटाईआ। ओसे वेले गोबिन्द दूर दुराडा उहदे अंदर काया दी लंघ गिआ दलीज़, घर बैठयां नज़री आईआ। ओस सवाणी ने अक्खां मीट के अंदर लाई नीझ, ध्यान इक्को इक्क बनाईआ। अंदरों किसे सच कीती ओस दे नाल प्रीत, जो प्रीतम हो के गलवकड़ी रिहा पाईआ। ओस ने खुशी विच्च आ के आपणी छाती उतों पाड़ दित्ती कमीज़, लोक लजया परे हटाईआ। जे तूं अंदर वड़या मैनूं बाहरों दे तमीज़, सनमुख हो के दरस दिखाईआ। प्रभू मैनूं तेरे मिलण दी रीझ, तेरे पिच्छे मटकी उठा के भज्जी वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, करनी दा करता आपणा खेल वखाईआ।

ओधरों चार चुक के होर लै गए अग्गे अठग्गती कदम, ओथे कंधा रहे बदलाईआ। इक्क ने तक्क लिआ एहदे चरनां विच्च पदम, जो नूर नूर नज़री आईआ। ओस दे अंदर प्रकाश होया मद्धम, या अली कहके ... ... मदद मंगी नूर खुदाईआ। झिरनाहट छिड़या बदन, थर थराहट गई आईआ। ओसे वेले लग्गा कंबण, हिलया वाहो दाहीआ। अंदरे अंदरे कुछ मंग लग्गा मंगण, आपणी झोली डाहीआ। सहज नाल सज्जे हत्थ दी

उंगली ला के चरनां दी धूढ़ी मस्तक लाया मज़न, आपणी खुशी वखाईआ। धूढ़ी लगदयां उहनूं नज़री आया एह सारयां दा सज्जण, हिंदू मुसलम सिख ईसाई वंड ना कोई वंडाईआ। मन ममता मेट के चरन लग्गा ढठ्ठण, चलदयां चलदयां सीस निवाईआ। गोबिन्द उत्ते पिआ लग्गा हस्सण, ताली दिती वजाईआ। नाले परदे लग्गा ढकण, हुक्म दिता सुणाईआ। फेर तुहानूं आवां रक्खण, आपणा संग बणाईआ। हिरदे आवां वस्सण, घर साचे डेरा लाईआ। चारां दा बणा सगंठन, घर इक्को दिआं वडयाईआ। प्रेम प्यार पहना के बसतर, आपणे रंग रंगाईआ। नाम अगम्मी घोड़ा दे के शस्त्र, शहज़ादे दिआं वखाईआ। एहो मेरी बख्शिश, जांदे राहीआं पार कराईआ। प्रितपालक बण के करां रकशश, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। नूर नुरानी दे के दरस, हरस दिआं मिटाईआ। जिस धारा नूं जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर तरसन, तुहाढ्ढे अंदर दिआं वहाईआ। काया माटी तुहाढ्ढे साफ़ करके आप बर्तन, वस्त धुर दी दिआं टिकाईआ। सुरती करके शब्दी मरदन, सवाधान आपणे रंग रंगाईआ। सिर रक्ख के तुहाढ्ढी उत्ते गर्दन, ग़रीब निमाणे पार लंघाईआ। की होया जे अरजन नूं कृष्न ने गीता निक्की जही सुणा दित्ती मेटण लई हरखन, हवस दित्ती बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौहवां दा लेखा पैहले शाहवाले आया लिखाईआ।

ओधरों फ़कीर चल्लया पैर पुठ्ठे, हत्थ अक्खां उत्ते रखाईआ। मैनूं केहड़ा अंदरों लुट्टे, खिच्ची जाए वाहो दाहीआ। जिस ने सिर तों भाण्डे सुट्टे, उह नच्ची टप्पी कुद्दी चाईं चाईंआ। इक्को वार कह दित्ता मेरे अगले पैंडे मुक्के, जीवन दी लोड़ रही ना राईआ। ओस वेले ओस दे पराण छुट्टे, गोबिन्द लै के गिआ चाईं चाईंआ। ओने चिर नूं ओस फ़कीर पिच्छे जांदयां नूं पाणी आ गिआ गिटे गिटे, पैर दित्ते लुकाईआ। थल्लउँ वट्टे चुभ्भे निक्के निक्के, ठोकर दित्ती लगाईआ। ओधरों गोबिन्द ने शब्द सरूपी परवाने लिखे, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द दित्ते सुणाईआ। ओस फ़कीर नूं पीड़ पई विच्च हिके, सीना लिआ दबाईआ। गोबिन्द ने ठोकर मारी पिच्छे, उसदा पिच्छा दिता बदलाईआ। फिर चारों कुण्ट इक्को दिसे, नूर नुराना नूर खुदाईआ। उह जल वुज़ू वाला गोबिन्द दिआं चरनां उत्ते चुलीआं भर भर सुट्टे, लबां नाल चट्ट चट्ट आपणी खुशी मनाईआ। एने चिर नूं गोबिन्द फेर ना दिसे, चार कहारां दे कंधी चढ़या भज्जया जाए वाहो दाहीआ। फ़कीर चलदा चलदा चुरासी कदमां उत्ते गोड्डया भार डिग्गे, अग्गे हत्थ लए टिकाईआ। ओधरों गोबिन्द दे तीर वज्ज गए सिध्धे, जो अणिआले दित्ते चलाईआ। दोंह हत्थां दे पै गए गिध्धे, खुशी नाल ताली दित्ती वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

ओधरों कुहार कुछ लैण लग्गे साह, डोली थल्ले दित्ती टिकाईआ। ओदरों फ़कीर बह गिआ उत्ते घाह, इक्क तिनका लिआ तुड़ाईआ। ओदरों चलण लगी हवा, सोहणी पवण आपणी ठंड वरताईआ। ओधरों वेखण आ गिआ खुदा, आपणा खेल जो पुरख अकाल हो के रिहा कराईआ। आवाज़ दित्ती ओ फ़कीर एह क्यों तिनका कीता जुदा,

गंढ उतों तोड़ाईआ। ओस वेले इष्ट गोबिन्द आण के बणया गवाह, हौली जेही दित्ता समझाईआ। फकीर तूं खुदा नूं कहो मैं तेरी भेटा रिहा करा, मैनूं लोड़ कोई ना राईआ। धन्न भाग जे तूं चल के मेरे घर गिउँ आ, घास फूस उत्ते डेरा लाईआ। जे प्रभू तूं एस घाह दे तिनके नूं लवें खा, साडी भुक्ख दएं गवाईआ। पुरख अकाल ने किहा सुणा, सच सच दिआं समझाईआ। जिस वेले गोबिन्द दे नाल मुड़ के जावां आ, आपणा वेस वटाईआ। तेरा सुक्का खा के घाह, आपणा शुकर मनाईआ। तेरा लहणा देणा दिआं चुका, भार चुक्क के आपणे कंध उठाईआ। किसे कारन पिच्छे गोदी लिआ सी बहा, गलवकड़ी लई पाईआ। अग्गे सारे लेखे दिते चुका, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप हो सहाईआ।

ढोडा कहे मैं बण आया ढोआ, प्रभू दो जहान देणा वरताईआ। मैं तेरे जोगा होया, होका दे के दिआं सुणाईआ। मेरी सुग़ात दे दे त्रै लोआं, पुरीआं दे पहुंचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

ढोडा कहे मैं सुणन आया ढोला, आपणा वेस वटाईआ। वेखण आया विचोला, भगवन बेपरवाहीआ। जिस सच दवारा खोल्ह्‌ा, ग़रीब निमाणयां दए वडयाईआ। वेखो पर्दा रिहा कोई ना उहला, सीस आपणे रिहा टिकाईआ। सेवक हो के बणया गोला, चाकर शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ।

ढोडा कहे मैनूं कोई ना कहो बाजरा रोटी, बाज़ी सिर दे नाल लगाईआ। चढ़ के परम पुरख दी चोटी, आपणा आसण लिआ जमाईआ। जन भगतो तुहाढे अंदर रहे ना वासना खोटी, दुरमत मैल दिउ धुआईआ। जन्म कर्म दा रहे कोई ना रोगी, दुखड़े रिहा मिटाईआ। घर आ के धुर संजोगी, विछड़े रिहा जुड़ाईआ। धुर दा ठाकर बण के मौजी, मजलस भगतां नाल लगाईआ। गोबिन्द बण के पिछला खोजी, मित्र प्यारा लिआ उठाईआ। जिस दी खीर सी एसे जोगी, टिंड दित्ती टिकाईआ। उह फड़ के आपणी गोदी, दीन दयाल रिहा बहाईआ। बेशक एह मंज़ल बड़ी औखी, जगत क्रिया हत्थ किसे ना आईआ। भावें ताअने देवण लोकी, झगढ़ा करे लुकाईआ। जन भगतां दा जीव जहान सारा दोखी, अबिनाशी करता इक्को दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ।

ढोडा कहे मैनूं कोई ना कहो टिक्की, जो हत्थां नाल पकाईआ। मैथों सुण लउ साची सिखी, सिख्या धुर दी दिआं दृढ़ाईआ। नंदू कोल पिछले जन्म दी चिट्ठी, जिसदा लेखा रिहा चुकाईआ। ढोडा कहे मेरी मिन्नत के सारे इक्की, इक्की सोहणी पंगत बणाईआ। जिस दी धार गुरमुख लिखी, उह देवणहार वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ।

इक्की इक्की बैठ जाणा विच्च कतार, चारों कुण्ट घेरा पाईआ। पंजां वरतौणा नाल प्यार, चारों कुण्ट सेव कमाईआ। इक्की मिन्ट दा एह विहार, बहुती डेर ना कोई जणाईआ। भोरा छड्ड के ना जायो कोई विच्च थाल, हत्थां उत्ते देणा फड़ाईआ। एहो प्रेम दे विच्चों निकलयां प्यार, मुहब्बत विच्चों मुहब्बत लई प्रगटाईआ। भावें एह नहीं कड़ाह परशाद, सवाद उहदे नालों चंगा आईआ। एह नंदू दी रह जाए याद, सरदारी बुणयाद आबाद खेड़ा दए वखाईआ। पुरख अकाल तुहाडे सभ दे होवे साथ, अनाथां दा नाथ, दीनां दीन नज़री आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साची वस्त भगतां दी झोली पाए सुग़ात, ए भरी रहे परात, दुक्ख भुक्ख सभ दी रिहा गवाईआ। (१० चेत श सं १ नंदू शाह दे गृह)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

शब्द गोबिन्द किहा मेरा भेव पाए कोई ना पोथा, पुस्तक सके ना कोई समझाईआ। कलिजुग अन्तम दीन दयाल नाल धोखा, परदा सके ना कोई चुकाईआ। जन भगतां दे के मौका, आपणा भेव दिता खुल्हाईआ। मार्ग दस्स के सौखा, राह इक्को दिता समझाईआ। पार करना युग चौथा, जुगती आपणे विच्च छुपाईआ। शब्दी हुक्म वरतणा बहुता, हत्थीं कार ना कोई कमाईआ। सति धर्म ना जाए औंता, सच सच दए प्रगटाईआ। हरि ख़ालक हो के खौंता, प्रभ मिल्या धुरदरगाहीआ। जिस लई चार युग साफ़ करदे रहे चौंका, वेद मंतर पढ़ पढ़ कर सफ़ाईआ। सो ब्राह्मण गौड़ा ओसे धाम पहुंचा, जिथ्थे ब्रह्म आपणा ध्यान लगाईआ। भगत दवार कर के सौंता, सोहणा रंग रंगाईआ। गोबिन्द कहे मेरा पूरा कर के ढईआ ढौंका, ढाल तलवार दा पन्ध मुकाईआ। साचे नाम चला के नौका, नईआ इक्को दिती वखाईआ। पड़दा लाह के धुर दे शाहो का, शहनशाह आपणा रंग रंगाईआ। खेल वखाए अगम्म अथाहो का, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। पन्ध चुकाए वाहो वाहो का, वाहवा आपणा हुक्म वरताईआ। झगड़ा वेखे थल अस्गाहो का, समुंद सागर फोल फुलाईआ। लहणा जाणे जगत पसाओ का, पसर पसारी पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

गोबिन्द कहे मैं कहणा इक्क सलोका, हरि सोहला दिता सुणाईआ। झगड़ा वेखणा (चौदां) लोका, परलोका पन्ध मुकाईआ। कलिजुग अन्तम भरे हौका, हाए उफ दुहाईआ। किस बिध खेल होणा इक्क दो का, निरगुण सरगुण वंड वंडाईआ। किस बिध प्रकाश होणा अगम्मी लोअ का, लोयण अक्ख खुल्हाईआ। किस बिध झगड़ा मुकणा दीन मज़ूब गरोह का, ग्रिहा सभ दा साफ कराईआ। किस बिध लहणा पूर करे माया ममता मोह का, मुहब्बत इक्क नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

गोबिन्द कहे मैं आया आपणे धाम नगर, सम्बल सोभा पाईआ। जेहदी सद मतवाली पध्धर, यकसां सोभा पाईआ। मन ना पावे ग़दर, करे ना कोई लड़ाईआ। मेरी पूरी होई सध्धर, सदके वारी घोल घुमाईआ। पुरख अकाल कीता अदल, इन्साफ दिता जणाईआ। गोबिन्द दी धार पूरन आया बदल, पूरन पूरन रूप बदलाईआ। जिस विच्च गोबिन्द होवे कदे ना कतल, खण्डा खड़ग ना कोई चतुराईआ। हत्थ ना आवे जगत कीत्यां यतन, यथार्थ आपणा भेव छुपाईआ। दवारे बह के अगम्मे पतन, बैठा खेल खिलाईआ। जन भगतां सच संदेशा आया दस्सण, सहज सहज सुणाईआ। अंदरों खोल्ह के अक्खण, मेला लिआ मिलाईआ। दवार जणा के वतन, घर दिता वखाईआ। जिथ्थे भगत भगवान वसण, तन मन्दर दिता सुहाईआ। गोबिन्द दा गोबिन्द पूरा करना बचन, जो माछूवाड़े गिआ दृढ़ाईआ। हरिजन गुरमुख वेखणे आपणे रतन, हीरे अमोलक खोज खुजाईआ। जिन्हां पिच्छे लथ्था सथ्थन, सत्थर यार हंढाईआ। उन्हां दी करनी कथन, कथा वारता आप बणाईआ। सृष्टी आया मथण, नाम मधाणा हत्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ।

गोबिन्द कहे मैं शब्द गुरू दी धार, धरनी धरत धवल सुहाईआ। मेरा रूप अपार, अपरम्पर दिता बणाईआ। मेरा खेल नयार, नेत्र वेखण कोई ना पाईआ। मेरा अगम्म शिंगार, सोहणा रंग रंगाईआ। मेरा कौल इकरार, भुल्ल कदे ना जाईआ। संदेशा देवे पुरख अकाल, दीन दुनी दा मालक धुरदरगाहीआ। माझे विच्चों नौं वेखणे लाल, जिन्हां दे सीस लाल रंग बंधाईआ। उन्हां दे गल विच्च बध्धा होवे रुमाल, पीला रंग सोभा पाईआ। हत्थ विच्च होवे इक्क इक्क दुशाल, चिट्टे रंग विच्च वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एह गोबिन्द दे दर दा पूरा करे सवाल, सवाल पिछले वेख वखाईआ।

गोबिन्द कहे मैं शब्द गुरू बलकार, बलधारी इक्क अखवाईआ। मेरा रूप अनूप निरँकार, निरगुण आप समझाईआ। मेरा गृह अंदर दवार, घर इक्को सोभा पाईआ। जिथ्थे नूर जोत उजिआर, जोती जाता डगमगाईआ। मैं ओस दा दुलार, जो सभ दा पिता माईआ। उह करे सच प्यार, प्रीतम धुरदरगाहीआ। उह वेखे वेखणहार, पूरब लेखा गिआ दृढ़ाईआ। लेखा जाण सदा जुग चार, जुग चौकड़ी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

गोबिन्द कहे मैं शब्द गुरू सच सच करां आदाब, सच सच विच्च समाईआ। मैनूं लहणा याद आ गिआ ढाब, महां सिँघ वल ध्यान लगाईआ। उह मेरा फुल गुलाब, महके थाउँ थाईंआ। उस कीता मेरे नाल हिसाब, लेखा मेरे मस्तक विच्च टिकाईआ। बेनन्ती विच्च किहा मैनूं रक्खणा याद, यादाशत ना देणी भुलाईआ। जिस वेले कलिजुग अन्त बदले समाज, समग्री आपणी आप वरताईआ। सच धर्म दा करे राज, रईअत चार

वरन उपजाईआ । गुरमुखां खोलणी जाग, निंदरा देणी मिटाईआ। नेत्र रोदयां गोबिन्द दे चोले ते पै गिआ दाग़, महां सिँघ ने रसना नाल चुम्म के आपणी खुशी बणाईआ। अगम्म आया स्वाद, सुख सागर विच्च समाईआ। फेर खेल वेख्या उस तों बाद, बादशाह पातशाह आपणा रूप दरसाईआ। मस्तक ज़ंजीरी तक्की जिस दी ढाई इंच लंबाई प्यार दा साजण साज, महां सिँघ ने हत्थ दिता लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ।

महां सिँघ ने किहा मैं तेरी मस्तक ज़ंजीरी चुम्मां, उठ के मुख दिता लगाईआ। माझे दा लेख पाड़ दे मेरे ला दे जुंमां, जामन मैं तैनूं लवां बणाईआ। गोबिन्द दे हत्थ विच्च सी इक्क कौड़ा तुंमां, मालवे दी रेत दा गवाह नज़री आईआ। उधरों नीले हलाया सुंबा, पौड़ दिता उठाईआ। उधरों इक्क भुल्ला होया आ गिआ दुंबा, भज्जया वाहो दाहीआ। उधरों उस थेह उत्ते बबर पिआ सी भज्जया कुंभा, नौं दिन दा पैहले सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ ।

गोबिन्द किहा महां सिँघ मेरे मस्तक वेख ज़ंजीरी, शरअ ज़ंजीरां रही कटाईआ। तेरा मेरा मेल होया तकदीरी, तदबीर आपणी लई बणाईआ। मैं पातशाह ते तूं सिख मेरा वज़ीरी, सहज दिता सुणाईआ। कुछ मंग लै मीरी पीरी, तेरी झोली दिआं भराईआ । महां सिँघ नक्क नाल कढ्ढ के लकीरी, गल वास्ता दिता पाईआ। नेत्र वहा के नीरी, रो रो दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

महां सिँघ ने किहा मेरा इक्क हाढ़ा, मिन्नत विच्च जणाईआ। क्यों नहीं अजे लेख पाड़ा, माझे वालयां लै तराईआ। गोबिन्द दोवें हत्थ फेरे उपर दाड़्हा, फेर छाती उत्ते टिकाईआ। फेर हत्थां उत्ते चुक्क के मुख चुम्मयां तूं मेरा धुर दा लाड़ा, सोहणा सोहणा नज़री आईआ। याद रक्ख लईं माझे वालयां नूं फेर मंगणा पैणा मेरा वाड़ा, दर मेरे सीस निवाईआ। हुण मैं तेरे नाल कौल करदा विच्च उजाड़ा, फेर भगत दवारा सोभा पाईआ। महां सिँघ ने नौं वार कीती निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गोबिन्द दे चरन विच्च लिखया ओस वेले माझे वाले तेरी मस्तक ज़ंजीरी दा करन फेर शिंगारा, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। गोबिन्द ने उठ के पुरख अकाल नूं कीता इशारा, निगह असमान उत्ते टिकाईआ। जे मैं आउणा फेर दुबारा, तूं मेरा संग रखाईआ। सच दस्स दे उह केहड़ा दिवस ते केहड़ा दिहाढ़ा, कवण वेला वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द शब्दी शब्द इशारा, इशारे विच्च समझाईआ। सम्मत शहनशाही पंज ते छब्बी पोह तिउहारा, तेरा सोहणा रंग रंगाईआ। फेर तैनूं सारी दुनियां विच्च करना ज़ाहरा, एह मेरे हत्थ वडयाईआ । पैहला पिछला सभ दा लाहुणा उधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि

अन्त दा मालक इक्क अवतारा, अवतर आपणी कार कमाईआ। (२५ अस्सू श सं ५ ऊधम सिँघ दे गृह)

✳ ✳ ✳ ✳ ✳
✳ ✳ ✳ ✳ ✳

........रावी कहे मैं थोड़ा सुणया जिस वेले ज़ोरावर फतह सिँघ नूं प्यार दित्ता सी गुजरी दादी, मस्तक चुम्म के पिड्ड थापी दित्ती लगाईआ। बच्चओ मैनूं अज्ज खुशी मैं बिना गोबिन्द तों तुहाढ्ढी कीती शादी, लाड़ी मौत नाल प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ।

बच्चयां किहा धन्न वड्डिआई तेरी अंमां, अंमड़ी सीस निवाईआ। सानूं नज़र आउँदा साडे पिता ने बदल देणा समां, पुरख अकाल दया कमाईआ। उस ने मार्ग लाउणा नवां, वाग गोबिन्द हत्थ फड़ाईआ। की भरोसा जगत वालयां दमां, जो आया सो चल जाईआ। धन्नभाग जे धर्म दी ख़ातर साडा लग्गे चंमा, हेत गुरमुखां वाला तोड़ निभाईआ। सानूं ना कोई खुशी ना कोई ग़मा, क्यों प्रभ नाल मिल के असीं खुशी ग़म दोवें दित्ते तजाईआ। फिर दोहां ने आपणे हत्थ रक्ख के उत्ते कन्नां, थोड़े बाहर नूं खिचाईआ। गुस्से विच्च आण के किहा वेखीं किते साडे अंदरों डोल ना जाईं साडया मना, मन कल्पणा विच्च हलकाईआ। क्योंकि गुरू अरजन ने लिख के चौदां सौ तीह पंना, नानक मोहर दित्ती लगाईआ। गोबिन्द दे हिस्से आया इक्को कन्ना, जिस कन्ने दी समझ किसे ना पाईआ। जिस ने दीन मज़्हब दा तोड़ना बंन्ना, हद्द हदूद देणी गवाईआ। भगत सुहेले वसदे वेख के छप्पर छन्ना, आपणी गोद लैणे बिठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी दया कमाईआ।

सदी चौधवीं कहे रावी जिस वेले राज ने पहली लाई इट्ट, ज़ोरावर सिँघ दे सज्जे चरन दे अंगूठे नाल छुहाईआ। फ़तह सिँघ ने सहजे पुच्छयां की तैनूं आ गई फिट, मैनूं दे समझाईआ। ओस हत्थ विच्चों फड़ के चिट्ट, हत्थ विच्च दित्ती बदलाईआ। हुण दोवें अडोल हो के पुरख अकाल दी जोत विच्च जाईए टिक, टिकटिकी इक्को नाल रखाईआ। एह बचन कह के दोवें आत्मा दी धार परमात्मा विच्च गए लिट, दुःख रोग ना कोई सताईआ। सदी चौधवीं कहे रावी ओस वेले मैं दोहत्थड़ मार के पई पिट्ट, मेंढी खोह के दित्ती दुहाईआ। रावी कहे मेरे हन्झआं दी धार उस वेले लंमी हो गई सवा गिठ, पाणी बूंद बूंद टपकाईआ। पुकार के किहा प्रभू तेरा खेल तूं आपे लईं नजिड्ड, दूजे चले ना कोई चतराईआ। फिर कदमां उत्ते सिर दित्ता सिट, निरमाणता विच्च सीस निवाईआ। मैनूं याद आ गिआ कुछ अरजन चिठ्ठी दे पिछले पासे गिआ लिख, लाईनां दो ढाई बणाईआ। जिस दा मज़मून गोबिन्द ओनां चिर प्यारे कर ना सके सिख, जिनां चिर आपणे बच्चे ना भेट कराईआ। ओन्नां चिर सृष्टी ना सके जित्त, जिंनां चिर माया ममता शौह

दरया ना जगत रुड़्हाईआ। रावी किहा गुर अरजन मैं उस दी किस तरां रक्खां सिक, आपणी आस वधाईआ। गुर अरजन किहा रावी जिस वेले पुरख अकाल दे नाल मिल के होया इक्क, जोत शब्द रूप प्रगटाईआ। फेर तैनूं आवे दिस, तैनूं लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी अक्ख खुल्हाईआ।

रावी कहे जिस वेले नींह आई उत्ते छाती, वड्डे छोटे वज्जी वधाईआ। उस वेले गुरू अरजन देव दोहां नूं देवण आया थापी, पुशत पनाह हत्थ टिकाईआ। दूल्हिओ दुलारयो गोबिन्द दे लाड़यो तुहाढ्ढे पिच्छे गोबिन्द ने फेर उधारने कोटन पापी, पत्तत पुनीत कराईआ। उन्हां दे मुखों बुल्हां विच्च निकली हासी, अंदर अंदर खुशी उपजाईआ। साडा सुनेहुड़ा देणा जा के पुरख अबिनाशी, तेरी किरपा नाल बिप्पता नज़र कोई ना आईआ। अरजन किहा बच्चओ इधर वेखो जिथ्थे गोबिन्द ने चरन छुहाउणा नहीं आपणी घाटी, जीवत जी फेरा कदे ना पाईआ। जिस वेले कलिजुग अन्त होवे अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। उस वेले पुरख अकाल नूं लै के साथी, सज्जण हो के वेस वटाईआ। जिस रावी ने मेरे चरनां दी धूड़ मस्तक लाई ख़ाकी, आपणी खुशी बणाईआ। उस दी जा के लाहे उदासी, चिन्ता दए गवाईआ। ज़ोरावर फ़तह सिँघ ने किहा साडा लहणा अजे फेर कुछ बाकी, उस दे नाल मिल के असीं हिसाब लईए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी साची खेल खिलाईआ।

रावी कहे साहिबज़ादिआं किहा हुण तां असीं आउँदे विच्च कंध, दुशमण देण सज़ाईआ। फिर असीं खुशी नाल वारना आपणा बन्द बन्द, बन्दगी दा नूरी राह चलाईआ। परमात्मा ने गीत गाउणा आत्म परमात्म छन्द, ढोला इक्क अलाईआ। असां भगतां दी ख़ातर भगत दवारे दीआं नींहां विच्च आ के लैणा अनन्द, आपणा आप प्यार प्रीती विच्च भेट कराईआ। गुर अरजन किहा शाबाश, पुरख अकाल सदा बख़शिंद, बख्शिश जुग जुग झोली पाईआ। जिस दे तुसीं दुलारे नंद, अनन्दपुर वासी आपणा संग नाल रखाईआ। रावी कहे एह अज्ज दी नहीं मेरी पुराणी मंग, छोटे छोटे बच्चे मेरी शहादत देण भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा बख़शिंद, बख्शणहार इक्क अखवाईआ। (१७ फग्गण श शं ४)